A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

रस एवं संगीत

Meena Verma
Research Schlor, Maharishi University, Lucknow

OPEN ACCESS CC BY

सार

संगीत की परम्परा अत्याधिक प्राचीन है। संगीतृ का उद्रगम वेद को माना गया है। सामवेद जिसमें संगीत का विस्तृत वर्णन मिलता है, प्राचीन काल में गायक को उदगाता कहते थे। जो कि वेदों की ऋचाओं का गान, यज्ञ के अवसर पर करते थे। भरतमुनी कृत नाट्य शास्त्र को संगीत का पंचम वेद माना गया। इस ग्रन्थ में संगीत के विषय में विस्तारपूर्ण जानकारी मिलती है। संगीत प्राचीन काल से ही मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। सनातन धर्म में सभी देवी देवता किसी न किसी वाद्य यंत्र के साथ विराजमान है, महादेव डमरू के साथ, भगवान विष्णु के पास शंख, बांसुरी बजाते हुए श्री कृष्ण, वीणा के साथ मां सरस्वती एवं नारद मुनि करतार के साथ, जिससे यह सिद्ध होता है कि हमारा संगीत कितना पवित्र एवं आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। ईश्वर अराधना एवं मोक्ष प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन संगीत को माना गया है। मनुष्य जीवन का प्रधान लक्ष्य आत्मिक आनन्द है और आत्मिक आनंद को हम संगीत साधना के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं।

कुंजी शब्द: *- संगीत, रस, शास्त्रीय संगीत, गायनशैली, ठुमरी।*

रस

हिन्दी भाषा में नव रस बनाए गए हैं। भारतकृत नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने 8 रसों का उल्लेख किया है। जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के लिए व्यायाम की आवश्यकता होती है बिना व्यायाम के शरीर बीमार होने लगता है ठीक उसी प्रकार हमारी आत्मा के लिए संगीत की अत्यंत आवश्यकता होती है। संगीत मोक्ष प्राप्ति का साधन है। जिस प्रकार एक भंवरा फूल के रस का स्वादन करता है लेकिन कभी भी उस फूल के प्रति मोह आसक्ति उत्पन्न नहीं होती है ठीक वैसे ही जो साधक संगीत की साधना कर रहा होता है वह संसार के विषयों में आसक्त न होकर ब्रहं अलौकिक आनंद का खुद भी अनुभव करता है और अपने संगीत के माध्यम से श्रोताओं को भी अनुभव कराता हुआ मोक्ष की प्राप्ति करता है। शास्त्रीय संगीत में रागों का अध्यात्मिक प्रभाव है। यह प्रभाव सिर्फ मनुष्यों ही नहीं बल्कि पशु पक्षियों को भी प्रभावित करता है। यही कारण है कि जब राग दीपक गाया जाता था तो दीपक जल जाते थे, मियां मल्हार, मल्हार आदि जब गाए जाते थे तो वर्षा होने लगती थी। संगीत में जब भी रस की उत्पत्ति होती है तो वहां सत्व गुण अपने आप ही प्रकट होने लगता है और उस स्थान पर तमोगुण और रजोगुण धीरे-धीरे कम हो जाते हैं।

काकू

काकू भेद यह रस उत्पत्ति एवं भावाभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। ध्वनि के माध्यम से उतार-चढ़ाव संगीत में विभिन्न रूपों में व्यक्त होता है और यह काकु कहलाता है। एक उदाहरण के रूप में राग अभोगी, काफी कौंसी गौड़ मल्हार, दरबारी आदि सभी रागों में कोमल गा का प्रयोग होता है लेकिन जब हम इन रागों को गाते हैं इसमें लगने वाले गंधार की ध्वनि भिन्न-भिन्न होती है, ठीक उसी प्रकार राग देशकार एवं भूपाली के स्वर एक है लेकिन उनका गायन समय से रस परिवर्तित हो जाते हैं। काकू के अलग-अलग भेद बताए गए है, यह भेद निम्न है- स्वर काकू, अन्य राग काकू, क्षेत्र काकू एवं यंत्र काकू।

स्वरों में रस

संगीत में वादी स्वर संवादी स्वर अनुवादी स्वर इन सभी स्वरों के द्वारा हृदय में उत्पन्न होने वाली चेतना को ही रस कहा जाता है। जब हमारा मन आनन्द की अनुभूति करता है तब हमें रस की प्राप्ति होती है क्योंकि जब कोई व्यक्ति अत्यधिक आनंद की स्थिति में होता है तब वह नाचने लगता है, गाने लगता है या अपने मन के भावों को अलग-अलग तरह से प्रकट करता है, संगीत का जो प्राण है वह रस ही है। संगीत में रस की अभिव्यक्ति सूक्ष्म रूप में मानी जाती है यह सूक्ष्मतम होती है। दूसरे शब्दों में अगर हम यह कहे कि संगीत का जो प्राण है वह रस है तो यह अनुचित नहीं होगा। श्रोताओं को आनन्द की अनुभूति कराने के लिए रस परम आवश्यक है।

संगीत के राग, ताल, स्वर, गीतशैली, कविता के शब्द आदि के माध्यम से रस प्रकट होता है। स्वरों का प्रभाव मनुष्य के हृदय पर अत्यंत प्रभावी रूप में पड़ता है। यही कारण है कि हमारे शास्त्रीय संगीत के सातों स्वरों को अलग-अलग रस से जोड़ा गया है-

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- षडज एवं ऋषभ के लिए वीर एवं रौद्र रस।
- गंधार एवं निषाद के लिए करूण रस।
- मध्यम एवं पंचम के लिए हास्य रस।

धैवत के लिए वीभत्स एवं भयानक रस को बताया गया है। किसी राग में लगने वाले स्वरों में जब इन्हीं स्वरों में कोई स्वर अंश स्वर बन जाता है तो राग का रस उसी के अनुसार हो जाता है जैसे जब किसी राग में वादी स्वर सा है तो उसका रस वीर, अद्भुत आदि होगा यदि किसी राग का वादी स्वर म या प है तो उसमें स्वाभाविक है कि श्रंृगार रस प्रकट होगा। इसके अलावा किसी राग का वादी स्वर गा एवं ना होने पर उसमें करूण रस की उत्पत्ति होगी।

रागों में निबद्ध बंदिशो में रस -

यह भी देखने को मिलता है कि एक ही राग में अगर बंदिशो के बोल भिन्न-भिन्न है तो उसमें रस परिवर्तन हो जाता है जैसे राग जय-जयवंती में निबद्ध बंदिश जिसके बोल है ''एरि आज पिया अपने संग खेलो री होरी....'' यह श्रृगार रस की अनुभूति कराती है। इसके अतिरिक्ति इसी राग में निबद्ध दूसरी बंदिश ''जय महारानी तू विद्या सरस्वती बैकुंठ की निशानी .....'' इस बंदिश के बोल भक्ति भाव पूर्ण हैं और यह माँ की आराधना करती हुई बंदिश है अतः इसका रस भक्ति रस हो जाएगा। राग जयजयवंती में ही निबद्ध एक और बंदिश जिसके बोल हैं ''दामिनी दमके डर मोहे लागे'' यह एक विरहिणी नायिका की हृदय के भावों को दिखाती है और इसमें वियोग श्रृगार वियोग रस की अवधारणा होती है। राग मालकौंस में निबद्ध बंदिश ''हम खोज गए हार'' इस बंदिश की बोल के अनुसार ही पता लगता है कि यह करूण रस की बंदिश है इसी जगह इसकी दूसरी बंदिश ''मुख मोड़ मुस्कान जात'' यह श्रृगार रस की अनुभूति कराती है, राग श्याम कल्याण में ही निबद्ध दूसरी बंदिश ''पायल मोरी बाजे रे सजना कैसे आऊं तेरे मंदिर'' यह श्रृंगार रस को प्रकट करती है। राग जोग में निबद्ध बंदिश ''साजन मोर घर आए मन अति सुख पाए'' यह बंदिश श्रृंगार के संयोग श्रृगार की अनुभूति कराती है इसी राग में निबद्ध दूसरी बंदिश जो कि इसके विपरीत है ''सैया नही आए मैं क्या करूं'' यह श्रृंगार रस में वियोग श्रृंगार की उत्पत्ति कराती है।

गायन शैलियों में रस-

गायन शैलियों के अन्तर्गत एक गायन शैली है ठुमरी। ठुमरी शब्द जो कि ठुम और री दो शब्दों से मिलकर बना है। ठुम का अर्थ ठुमकने से होता है और री का अर्थ है अंतरंग सखी इस प्रकार ठुमरी नायिका के मन में उत्पन्न होने वाले विभिन्न भावों की जो लहरें होती है उसका चित्रण और इन्हीं भावनाओं को जो मानव के हृदय में उत्पन्न होती है ठुमरी में इन भावनाओं का जो चित्रण विभिन्न रागों की छाया के माध्यम से अर्विभाव तिरोभाव के माध्यम से कराया जाता है। ठुमरी भाव प्रधान गायकी है। ठुमरी के बोल में भिन्न-भिन्न भाव होते हैं जो गायक स्वर लहरियों के माध्यम से अपने गायन में उजागर करके श्रोताओं के मस्तिष्क पर अंकित करता है। घूंघट में मुंह छुपा कर चलती हुई नायिका, थोड़ा सा घूंघट ऊपर करके चलती हुए प्रीतम से मिलते ही शर्म के मारे नेत्र झुका कर चलती हुई नायिका, कभी-कभी अपनी भौवों को चढ़ाकर तिरछी नज़र से देखने वाली नायिका आदि ठुमरी गायकी में भिन्न भिन्न प्रकार के रागों की छाया को दिखाकर इन छवियों को उजागर करते हैं। ठुमरी में जो शब्द और स्वर होते हैं वह एक दूसरे के पूरक होते हैं। एक शब्द को ही गायक विभिन्न स्वर लहरियों के माध्यम से भिन्न-भिन्न भावों को प्रस्तुत करता है। ठुमरी में सभी रसों में ठुमरी सुनने को मिलता है। ठुमरी जिसके बोल हैं ''ना जा बलम परदेस जिया में लागे ठेस'' वियोग श्रृगार से उत्प्रोत है। इसी तरह दूसरी ठुमरी जिसके बोल हैं ''रसीले तोरे नैन'' श्रृंगार रस प्रधान ठुमरी है। एक और ठुमरी जिसके बोल है ''पनिया भरन को गई सखी री ठारो कन्हैया'' यह ठुमरी छेड़छाड़ के भाव से पूर्ण है। असंख्य ठुमरियों में कृष्णलीला से संबंधित हैं और जो की भक्ति भाव से उत्प्रोत है।

ताल लय तथा वाद्य यंत्रों में रस -

प्राचीन ग्रंथकारों ने ताल से भी रसों की उत्पत्ति मानी है। संगीत के अंतर्गत लय तीन प्रकार की मानी गई है विलंबित लय, मध्य लय, दुरत लय इन तीनों लयो का संबंध रस के साथ है। जहाँ एक और विलंबित लय में गंभीरता ठहराव नजर आता है वहीं दूसरी ओर मध्य एवं दुरत लय द्वारा चंचलता का प्रादुर्भाव होता है।

विलंबित लय में जब हम धुरपद को गाते हैं तो वहां पर शान्त, वीर, भक्ति और करूणा रस की प्राप्ति होती है। धुरपद को भिन्न-भिन्न तालों में गया जाता है जैसे कि ब्रह्मा, गणेश, लक्ष्मी, चारताल तीव्रा आदि इसमें यह वीर एवं अद्भुत, रौद्र एवं भक्ति रस को प्रकट करता है। विलंबित लय में गाए

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

जाने वाले ख्याल यानी की बड़ा ख्याल इसकी लय धुपद्र की भाँति होती है और यह हमें वीर, भक्ती, रौद्र, अद्भभुत रसों अनुभूति कराते हैं। मध्यलय एवं दुरत लय में गाए जाने वाल छोटे ख्याल हमें श्रंृगार रस की अनुभूति करते हैं इसके अतिरिक्त दुरत लय में गाया जाने वाला तराना जिसमें शब्द नहीं होते हैं मुख्यत ताना दिर दिर तादानी दानी देरेना आदि बोलो का प्रयोग होता है यह इस गायकी के गायन समय में वीर, अद्भुत श्रंगार रस प्रकट होता है।

कुछ तालों के नाम जिनके द्वारा उत्पन्न रस विद्वानों द्वारा बताए गए हैं, दादरा ताल में वात्सल्य रस, कहरवा ताल में श्रृंगार रस, एकताल एवं धमार ताल में श्रृगार एवं अन्य रस, इसके अतिरिक्त चैताल एवं आड़ा चारताल में वीर रस आदि।

विद्वानों ने विभिन्न वाद्ययंत्रों के माध्यम से भी रस उत्पत्ति मानी है, अलग-अलग वाद्ययंत्रो से रसों को जोड़ा है। जैसे मृदंग पखावज जो कि अवनद्ध वाद्य के अंतर्गत आते हैं इसे वीर रस की उत्पत्ति मानी गई है। ढोलक एवं तबला इन वाद्ययंत्रों से श्रंृगार रस की उत्पत्ति मानी गई है। सारंगी एवं वायलिन तत् वाद्ययंत्र के अंतर्गत आते हैं इसे करूण रस की उत्पत्ति मानी गई है।

भरत मुनि ने रसों का जब वर्णन किया है तो रस के साथ रसों के रंगों का भी वर्णन किया है। जिसमें श्रृंगार रस का वर्ण नील है, हास्य रस का सफेद, करूणा रस का कपूत, रौद्र रस का लाल, वीर रस का चमकीला सफेद, भयानक रस का काला, वीभत्स रस का नीला तथा अद्भुत रस का नीला रंग बताया है। भारत ने सभी रसों के अलग-अलग देवताओं का भी वर्णन किया है जिसके अंतर्गत श्रंृगार रस के देवता विष्णु, वीभत्स रस के देवता महाकाल, भयानक रस के कालभैरव, वीर रस के महेन्द्र तथा अद्भुत रस के देव ब्रह्म है।

निष्कर्ष

संगीत में सौन्दर्य बोध की कोई सीमा नहीं है संगीत से जो आनंद प्राप्त होता है वह भी अनंत है। संगीत का उद्देश्य यह है कि सांसारिक चिंताओं, दुख से दबे हुए जो व्यक्ति है उन सभी को चिंताओं से मुक्त कराकर अलौकिक सुख की प्राप्ति करवाना। संगीत हमेशा चार चीजों का आश्रय लेता है स्वर, भाषा, ताल और मार्ग।

रस का जो विषय है वह मनौविाानिक है उसका प्रभाव भौतिक नहीं है। संगीत की साधना में रस बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है वह संगीत का प्राण है। रस विहीन संगीत निरर्थक है। प्राचीन काल से ही अलग-अलग विद्वानों ने संगीत रस पर अपने विचारों को व्यक्त किया है उन्होंने रस को ''ब्रह्म स्वाद सहोदर'' कह कर बुलाया है। संगीत कला ठीक उसी प्रकार मोक्ष प्राप्ति का साधन है। किसी भी कला को सार्थक तभी माना जाता है जब ज्ञात और ज्ञाता तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। जब श्रोता कलाकार के अनुभूति से तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाता है तब वह उसके भावों की अनुभूति नहीं कर पाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि रस संगीत तथा अन्य सभी ललित कलाओं का प्राण है। कोई भी कला रस के बिना जीवंत नहीं हो सकती।

संदर्भ

1. बसन्त, (2017), ''संगीत विशारद'', हाथरस, संगीत कार्यालय।
2. डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल, (1983), ''ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ'', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. डॉ. भोलानाथ तिवारी (1961), ''भाषा विज्ञान'', इलाहाबाद किताब महल।
4. लक्ष्मी नारायण गर्ग, (1957), ''हमारे संगीत रत्न'', हाथरस, संगीत कार्यालय।
5. डॉ. शरदचन्द्र श्रीधर परांजपे, (2006), ''भारतीय संगीत का इतिहास'', चैखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
6. डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, (2012) ''निबन्ध संगीत'', संगीत कार्यालय हाथरस।
7. उमेश जोशी (1978) ''भारतीय संगीत का इतिहास'', कुमुद् कला प्रिन्टिर्स।

साक्षात्कार

उस्ताद गुलशन भारती, लखनऊ कव्वाल बच्चा घराना।